Name : Sharmin Sultana (Tania)
Address : 25/2, Don Chamber, Narayangonj.
Profession :Housewife
Blood group : O+ve
Mobile no. : 01854760843

Name : Barna Das
Address : 48, BNNBD road, Banglabazar, Dhaka.
Profession : Teacher,
Blood group: A+ve
Mobile no. : 01776-074525

Name: Asma Akter
Address : Jamuna Bank, Khilkhet Branch, Dhaka
Profession : Banker
Mobile No.0191547877

Name : Meher Nigar Tonu
Address : Nsw-Australia
Profession : Early years learning Educator
Blood Group: O+ve
Mobile no. :,0422022718,

Name : Mita Roy
Address : Hafez tower 1
College road Chawkbazar Chattogram
Profession : Home Maker
Blood group: AB+ve
Mob: 01742720116

Name : Khairun Nahar Shampa
Address : Masterpara, Dupchanchia, Bogura.
Profession : Service
Blood group : AB+ve
Mobile no : 01712284150

Name :Nasima Akter
Address : Shokhipur, Tangail
Profession : Lecturer(Geography)
Blood group: A+ve
Mobile no- 01739943223

Name : Mahmuda khan Nazu
Address : Australia
Profession : Banker
Blood group : A+ve

Name : Nazma Khan Juthi
Address : Kadomtala Bazar
Rasulpur Satkhira Sador Satkhira
Profession : Housewife
Blood group: A+ve
Mobile no : 01755112353

Name : Lipi Paul
Address : Golapganj, Sylhet
Profession : Assistant Teacher
Blood group : A+
Phone no : 01717674460

Name: Sarmista Biswas (Radha)
Address: 9184 16th ave, montreal quebec Canada
Profession: Assistant Manager
Blood group: O negative
Mobile no: 514 546 4940

Name : Roksana Parvin
Address : Finland

Name : Selina Akter
Address : House 45Gausul Azam Avenue
Sector 14 Uttara Dhaka-1230
Profession : Housewife
Blood group: B+ve
Mobile no : 01911050770

Name : Rita Dey
Address : H I Ambia Villa,
7/1, Moneswar Road
Jhigatola, Dhaka-1209.
Profession: BCS (Agril.)
Blood Group: O+ve
Mobile no. 01720107077

Name : Farhana Poly
Address : 306 East Rampura
Dhaka 1219
Profession : Housewife
Blood group:
Mobile no : 01711832020

Name : Farhana Husain Zinia
Address : Syedan's Apartment
House.41/B,Apt.103
Dhanmondi Road.1
Dhaka-1205
Profession : CSM AT&T Tale-communication USA
Blood group: O+ve
Mobile no : +14075954300

Name : Aklima Akther
Address : 23 tulip drive Toronto
Ontario M1r4w3
Profession : Customer Service
Blood group: A+ve
Mobile no : 6474694347

Name : Farhana Anzum Munia
Address : 34, Mohakhali South para
Tejgaon, Dhaka
Profession : Home baker
Blood group: O+ve
Mobile no : 01717638499

Name : Soma Saha
Address : 26/24 Sher Shah Suri Road
Mohammadpur, Dhaka 1207
Profession : Private Service
Blood group: B+ve
Mobile no : 01715013231

Name : Jharna Akter
Address : 526, Kazi Mention
Moddhopara, B.Baria
Profession : Beautician
Blood group: A+ve
Mobile no : 01736860493

Name : Meherun Nessa Sultana
Address : 11/3Baistake,Mirpur-13
Dhaka-1216
Profession : Housewife
Blood group: A+ve
Mobile no : 01713229572

Name : Sadia Nasim
Address : 9 Rosebank gardens
London E3 5EE
Profession : Service
Blood group: A+ve
Mobile no : 00447867474379

Name : Hafeza Khatun Hamzu
Address : 312/2-5,26 Notunbagh
Khilgaon Taltola Dhaka
Profession : Housewife
Blood group: O+ve
Mobile no : 01977538690

Name : Ranu Akter
Address : House.160/161 Road.3
Block.A Bashundhara R/A
Profession : Housewife
Blood group: O+ve
Mobile no : 01704750460

Name : Tanzila Alam Tania
Address : 10-A/10-9, Pallabi
Mirpur, Dhaka-1216
Profession : Housewife
Blood group: A+ve
Mobile no : 01674930398

Name : Shazia Akter Dulali
Address : Road-14,House-21,BLDG-Khan's
Rupnagar R/A,Mirpur,Dhaka
Profession : Housewife
Blood group: B+ve
Mobile no :01733742853

Name : Jesmin Akter Munny
Address : Vi.Gorail,Mirzapur,Tangail
Profession : Service
Blood group: AB+ve
Mobile no : 01747501034

Name : Masuda Akter
Address : 675 London road Grays
RM20 3HL UK
Profession : Housewife
Blood group: O+ve
Mobile no : 00447854800116

Name : Dipa Yasmin
Address : Gopibag RK Mission Road
Motijhil Dhaka
Profession : Housewife
Blood group: B+ve
Mobile no : 01715024967

Name : Sabrina Hossain
Address : Obergasse 8 Hanau 63456
Germany
Profession : Kindergarden Kitchen Supervisor
Blood group: B+ve
Mobile no : 01739230579

Name : Sharmin Rahman
Address : Ka-13 South Badda Gulshan Dhaka 1212
Profession : Housewife
Blood group: AB+ve
Mobile no : 01911207719

Name : Tahmina khanom Nila
Address : Matuail Mridhabari Jatrabari Dhaka
Profession : Housewife
Blood group: A+ve
Mobile no : 01730872556

Name : Ferdousi Sultana
Address : 20310 East Silver Creek Lane Queen Creek Arizona 85142 USA
Profession : Business
Blood group: O+ve
Mobile no : 4803885457

Name : Shamim Ara Begum Happy
Address House.8/A/1 Zenith Tower Road.14(new)Sobhanbagh Dhanmomdi R/A, Dhaka
Profession : Housewife
Blood group: O+ve
Mobile no : 01711150731

Name : Shahenoor Begum
Address : Sector.01, Road.12, House.17 Uttara,Dhaka
Profession : Service Holder
Blood group: O+ve
Mobile no : 01726128836

Name : Rumana Zaman
Address : House 18/A Road 44 Apt 2SW Gulshan 2 Dhaka 1212
Profession : Business
Blood group: B+ve
Mobile no : 8801929993581

Name : Rafeza Ajmere
Address : Mymensingh
Profession : Teacher
Blood group : A+ve
Mobile no : 01884658226

Name : Aparna Datta Apu
Address : uttara,Dhaka
Profession : Housewife
Blood group: O+ve
Mobile no : 01727268604

Name : Beethika Guha
Address : 129 Faidabad (Goaltak Club Mor) Dakkhin Khan Uttara, Dhaka-1230
Profession :Teacher
Blood group: O+ve
Mobile no : 01740645884

Name : Nusrat Binta Ahasan
Address : Naruli Madhapara (Uttar Chelopara) Ward No.20, Bogra Sadar,Bogra
Profession : Service (Chemist)
Blood group: AB+ve
Mobile no : 01839269159

Name : Tinku Saha
Address : NewYork, USA
Profession : Teacher
Blood group : O+ve

Name : Sanchita Saha Popy
Address : Kari dimond (D -1) Indira road Farmget Dhaka
Profession : Private Service
Blood group: O+ve
Mobile no : 01716609636

Name : Joly Banik
Address :44/1 Rahim Square New Market Dhaka
Profession : Housewife
Blood group : O+ve
Mobile no : 01715200718

Name : Sohana Hossain Miki
Address : Sector 10. Road 10 House-68 Uttara Dhaka
Profession : Mohila Vice Chairman
Blood group: B+ve
Mobile no : 01711411170

Name : Dolly Akter
Address : 98 Boro Moghbazar Eastern Rokeya Tower Dhaka
Profession : Housewife
Blood group : AB+ve
Mobile no : 01985890657

Name : Rahe Madina Kari
Address :1120/2, East Shewrapara Kafrul Mirpur Dhaka-1216
Profession : Business
Blood group: B+ve
Mobile no : 01626300264

Name : Nahima Sultana
Address : 68/ka/1 Urban Flower (C3) Jigatola Dhanmondi Dhaka-1208
Profession : Teacher
Blood group : B+ve
Mobile no : 01716237191

Name : Afroza Islam Mimi
Address : 621/4 North Shajahanpur Dhaka
Profession : Home Maker
Blood group: O+ve
Mobile no : 01783382859

Name : Razia Sultana Lovely
Address : 22148 Trailside Sq Virginia, USA
Profession : Heather care CAN
Blood group : A+ve
Mobile no : 5726659208

Name :Selina Haque
Address : Bay Point, CA 94565
Dhaka
Profession : Certified Medical Assistant
Blood group: O+ve

Name : Madhabi gupta shilpi
Address : 44 Mitali Road
Rayer Bazar Dhaka
Profession : Assistant Teacher
Blood group: O+ve
Mobile no : 01816875817

Name : Shamsunnahar Putul
Address : Shahid Nagar
. . . Gendariya, Dhaka
Proffetion: Teacher
Mbl No... : 01640800753
Blood gro : O +ve

Name- Aparna Saha Mukta
Address- Mohammedpur, Dhaka.
Profession- Housewife
Blood group- A+ve
Mobile no-01552328828

Name: Urmi Das
Profession : Service
Address : Polli Bidyut Unnoyon Board.
Srimongol, Sylhet
Blood group: A+ve

Name : Supriya Saha
Address : Gopal Chandra Saha,
Coal Mining Co.Ltd.Chauhati,
Parbatipur, Dinajpur.
Proffesion: Housewife
Blood group- O+ve
Mobile no- 01743305847

Name. : Badrunnahar Beauty
Address.... :Bangla Bazar, Dhaka
Profession : Home maker
Mbl no..... : 01710193625
Blood grp.. : O+ve

ইফরা
মা: আকলিমা আক্তার

স্মৃতিতে বন্ধুরা

রায়হানা রুমা

১৯৯০ সাল। বাবার হাত ধরে গুটিগুটি পায়ে হোমসে প্রবেশ করলাম।প্রথমে কি আনন্দ ঢাকায় পড়ব। গ্রামে থাকতে হবে না। টাংগাইল আরেকটা জেলা তা কখনই জানতাম না। তো ভর্তি প্রস্তুতির পর হোস্টেল এ ঢুকিয়ে দিয়ে আব্বা চলে গেলেন। তখন বুঝলাম একা থাকার কি যন্ত্রণা। সারাক্ষন খাওয়া দাওয়া বাদে শুধুই কান্না। তার ওপর ডিউটি করা, দুই বেনি করে দু'বার রেডী হওয়া। লেখাপড়া বাদে শুধুই কান্না। বছর জুড়ে ফলাফল শুধুই ফেল। তাও ৭ম থেকে ৮ম এ উঠেছি। এখন আস্তে আস্তে মন টিকতে শুরু করল। বন্ধুদের সাথে হইহুল্লোর, চুরি করা, যে কোনো ড্রিল/ ডিউটি, রাতে চুরি করে জন্মদিন উদযাপন করা। ধরা খেলে ফলাফল যা হবার তাই, শাস্তি সবাই এক সঙ্গে পেতাম। কখন কেউ কারো নাম বলতাম না। এরই নাম হয়ত বন্ধুত্ব। তো যাক আর কখনো চলে আসার নাম নিইনি। ওখানেই কেটে গেল দ্বাদশ শ্রেনী পর্যন্ত। প্রকৃতির নিয়মে ওখান থেকে চলে আসার বিদায় ঘন্টা বাজল। নিজের অজান্তেই চোখ মুছতে মুছতে বের হলাম। তারপরও লিন্ডা, সাদিয়া নাসিম সুমি, আসমা ওদের সংগে যোগাযোগ ছিল। ২য় বর্ষে হঠাৎ আমার বিয়ের মাধ্যমে আমার জীবনে ঝড় নামে। সব বন্ধুরা হারিয়ে যায়। কত যে নিরবে কেঁদেছি সেই দিনগুলর জন্য কেউ জানেনা। হঠাৎ লিন্ডা আমার মায়ের কাছে চিঠি পাঠায়, আমি যাই বিয়ের দাওয়াতে। আবার হারিয়ে গেল। আবার আমি ওর আব্বু কে ফোন দেই। ও কানাডায় থাকে, কিছুদিন আগে চল গেছে। আবার ফোন দেই দেড় বছর পর। আমি আংকেল কে আমার নাম্বার দেই। ও তারপরের দিনই ফোন দেয়। এইতো আমার ভাগ্য খুলে গেল। ও বলল ওর সাথে অনেকেরই যোগাযোগ হয় ফেসবুক এর মাধ্যমে। আমাকে ও খুলতে বলেছে। নিজের কটা জমানো টাকা দিয়েই একটা মোবাইল কিনেছি আর তো ঝাকঝাক বন্ধু পাই। ওর পর পাই রিনাকে। আহ কি শান্তি। তারপর বোটানিক্যাল গার্ডেনে সবাই একসঙ্গে পিকনিক করলাম। এখন আমার মধ্যে খুব শক্তি কাজ করছে, কিছুই কঠিন লাগে না। রোগ-শোক সব দূরে। বিশ বছর পরে ওদের যখন পাই, গর্বে আমার বুকটা ভরে যায়। আমার বন্ধুরা আজ এত প্রতিষ্ঠিত; হায় আফসোস কেন আগে তোদের কে পেলাম না। কত স্মৃতি মনে পরে তোদের নিয়ে। তার মধ্যে সাদিয়া নাসিম সুমির লেখা নকল করে নিজের পঁচা লেখাকে পরিবর্তন করা, স্টাডির পর চানাচুর পানি দিয়ে মুড়ি মাখা, ক্লাস নাইন টেনে বিশাল আন্দোলন যা টিসির পর্যায়ে চলে যায়। বর্নাকে যমের মতো ভয় পেতাম, কারন সে ফার্স্ট গার্ল এবং আমাদের নেতা বলে। সে তো অনেক কাহিনী। যেখানেই গিয়েছি বান্ধবী তো অনেক পেয়েছি। কিন্তু আমার হোমসের বান্ধবীদের মত এমন বান্ধবী সারা দুনিয়ায় আর হয়না। ভাগ্যিস ভারতেশ্বরী হোমসে পড়েছি। দোয়া করি আলাহ পাক তাদের নেক হায়াত দান করুন। আরো যুগ যুগ তোরা বেঁচে থাক। আমিন।

একটি দুঃস্বপ্ন

রাফিজা আজমিরী

হোমসে যখন পড়াশোনা করি তখন শুধু বুঝতে পারলাম ভাল ফলাফল করতে হবে। ভাল ফলাফল নিয়ে হোমস থেকে বের হয়ে ভাবতাম ভাল চাকুরী করে স্বাবলম্বী হতে হবে। সরকারী আনন্দ মোহন কলেজে বিএসসি (সম্মান) উদ্ভিদ বিজ্ঞান এ ভর্তি হলাম। শিক্ষক-শিক্ষীকাদের আচার-আচরন ভীষন ভাললেগে গেল। ভাবলাম সরকারী কলেজের শিক্ষক হব। আমার বাবা সব সময় বলতেন বি সি এস পরীক্ষা দিয়ে সেরা চাকুরী করতে হবে। তাই লক্ষ্য স্থির হয়ে গেল। বাংলাদেশ সিভিল সার্ভিস (বি সি এস) পরীক্ষা দিয়ে সরকারী কলেজে শিক্ষকতা করব। জীবনের লক্ষ্য বাস্তবায়ন করার জন্যে চেষ্টা শুরু করলাম। প্রাতিষ্ঠানিক পড়া শেষ হয়েই ছোট একটা চাকুরী হয়ে গেল। একদিকে চাকুরী, অন্যদিকে বি সি এস ক্যাডারের জন্যে পড়াশোনা এক সাথে চালিয়েগেলাম। এদেশের সবচেয়ে কঠিন পরীক্ষা এটি, তাও আবার ৩টি ধাপ। তবুও ১ম পরীক্ষাতে মৌখিক ধাপ পর্যন্ত চলে গেলাম। এরপর আরো আত্মবিশ্বাসের সাথে চেষ্টা করলাম। ২০০৭ সালে ২১শে জানুয়ারী জানতে পারলাম আমি শিক্ষা ক্যাডারের জন্য উত্তীর্ণ হয়েছি। স্বপ্ন সত্যি হয়ে গেল। তখন দেশে চলছিল রাজনৈতিক সংঘাত। কয়েকদিন পরে সেই রাজনৈতিক অস্থিরতা আক্রমণ করল ২৭ তম বি সি এস উত্তীর্ণ প্রার্থীদের। রাজনৈতিক নেতাদের অসদ্বাচরন ও দূর্নীতি পরায়ন উচ্চপদস্থ আমলাদের দায় চাপানো হলো আমাদের উপর। আমাদের মত সাধারণ নির্দোষ নাগরিকদের শাস্তি দেওয়া হল। ৩০শে মে ২০০৭ সালে বাতিল হয়ে গেল স্বপ্নের চাকুরী। প্রদ্বীপের শিখার মতো নিভে গেল জীবনের লক্ষ্য, স্বপ্ন হয়ে গেল দুঃস্বপ্ন। যখনই এই দুঃস্বপ্নের কথাটা মনে হয় তখনি বুকে নাড়া দিয়ে ওঠে পুরোনো ক্ষতের ব্যাথা।

কেউ কথা রাখে না

সিফাত ইবনে সিরাজ (নিয়াজ)

'জাগরণ' শব্দটি মাথায় এলেই সমার্থে আন্দোলন, নতুন ধারনার স্থাপনা,পুরোনো জীর্ণতা ছেড়ে চিন্তার নবায়ন ইত্যাদি ধরনের শব্দ বা বাক্যগুলো পাশাপাশি চলে আসে চিন্তায়। জাগরণ বিষয়টি হরহামেসা চটজলদি চলে আসবার বিষয় নয়। বিষয় ও ক্ষেত্র অনুযায়ী যেকোন ধরনের জাগরনের পেছনে অপরিসীম ত্যাগ, চেষ্টা, সময় প্রয়োজন। বছরের পর বছর কিংবা যুগের পর যুগের প্রতীক্ষায় আসে জাগরণ।

'এসো'কেও আমি ব্যক্তিগত ভাবে এই ক্ষেত্রে তেমনই এক জাগরণের নবরূপ হিসেবে দেখছি। আজ যেই ভারতেশ্বরী হোমস্ এর ৯৪ ব্যাচ এসো'র উদ্যোক্তা হয়েছেন তারা কালও ছিলেন, ছিলেন পরশুও। তবে এসো'র উপস্থাপন আজকের।

এতো সল্পতম সময়ে ঐক্যমতে এসে 'এসো' যে সাংগঠনিক কাঠামোবদ্ধ হয়ে এগোচ্ছে তা সত্যিই অনুপ্রেরনার। স্বপ্ন সকলেই দেখে। তবে স্বপ্নকে লালন করে বাস্তবায়নের উদ্যোগ হয় খুব কম, আর সেই উদ্যোগকে সফল করা ভীষণ কঠিন। সেই কঠিন কাজটিই হোমস্ ৯৪ কাঁধে তুলে নিলেন সহজে। একটি মানবিক সংগঠনকে সফল করবার জন্য উদার, ত্যাগী মানসিকতার, আর্থিক সামর্থ্যের ও কাজ করবার সক্ষমতার যেই মেলবন্ধনময় ক্ষেত্রের দরকার , 'এসো' তে তার প্রায় সবই বিদ্যমান।

বর্তমানে এই সংগঠনটির সদস্যগণের মধ্যে প্রায় ১ ডজনেরও বেশি মানুষকে (স্বর্ণা, ডলি, বর্ণা, রেখা, শিল্পী, রুমানা, সামিরা সহ আরো অনেককে) আমি ব্যক্তিগত ভাবে চিনি প্রায় ২২ বছরের বেশি সময় ধরে। নানা সময়ে নান কারনে সাংগঠনিক কাজ করতে যেয়ে আমি এঁদের মানসিকতার ব্যাপ্তী ও দৃপ্তি ও স্বচ্ছতার সাহচর্যে এসেছি। এঁদের দেখে কখনো হয়েছি অনুপ্রাণিত, কখনো আপ্লুত, কখনো কৃতজ্ঞ, কখনো জ্ঞানলব্ধ। তাই শুধুমাত্র ভালো কিছু লিখবার জন্য লিখা নয়, আত্মবিশ্বাস থেকে আস্থার সাথে বলছি যে, বড় ধরনের কোন বিপত্তি না ঘটলে বহুদূর যাবে এই সংগঠন। আমি নিজেকেও, নিজেই এই সংগঠনের একজন ভাবতে গর্বিত বোধ করি। সদস্য হই বা না হই, ভালো কাজ বা ভালো উদ্যোগ সকল মানুষের। তাই 'এসো' ও আমার।

আমি আশা করি 'এসো' হোক প্রকৃত মানবিক এক সংগঠন। আমরা সবাই মিলে বিদ্যালয়, হাসপাতাল, অনাথ আশ্রম, বৃদ্ধাশ্রম, দূষণ রোধ প্রকল্প সবই করবো। আর এসব সফল করবার জন্য হয়তো আমাদের ব্যবসা বানিজ্যের প্রয়োজন হবে। বানিজ্য আমরা করবো নিঃসন্দেহে। তবে যাই হোক আমরা আমাদের প্রকল্পগুলোকে, উদ্যোগগুলোকে বানিজ্যিকরণ করবো না। বেঁচবোনা কোথাও 'এসো' কে কোনভাবেই।

কেউ কথা রাখেনা,

'এসো' কথা রাখুক আশা করি-
অনাগত ইতিহাস হোক বৈষম্যহীন।

ধর্ষিতা

আফিয়া আঞ্জুম (এষা)

এতো রাতে বাইরে গেলে কেনো?
এখনতো মাত্র আটটা বাজে।
এতো ছোট জামা পরেছ কেনো?
এটা আমাদের খেলার পোশাক।

আচ্ছা রাত আটটায় বাইরে যাওয়া দোষ?
ছোট জামা পড়া দোষ?
শুধু খারাপ নজরে দেখাটা দোষ নয়?
কেস করবেন, মানসম্মান দেখবেন তো?
মার্ডার কেসে কি মৃত ব্যাক্তির দোষ থাকে?
নাকি মৃত হওয়ার কারণে সে লজ্জা বোধ করে?
এখানে তফাৎ এটাই
ধর্ষিতরা মরেনা,
ওরা লাশ হয়ে বেঁচে থাকে।
কিন্তু একথা কি পুরুষ বুঝবে?

নারীরা নারীর পাশে দাঁড়ালে
ভাঙ্গবে নিরবতা।
আশা করি থাকবেনা একদিন
আর কোনো ধর্ষিতা।

চলি একসাথে

ফারহানা পলি

আমার উপস্থিতি টের পাচ্ছেন ?
ভিজ্যুয়ালী আমি হাসছি, খাচ্ছি, ঘুড়ে বেড়াচ্ছি
তাই প্রমান করছে যে আমি বেঁচে আছি।
সত্যি কি বেঁচে আছি ?

এভাবে নয়,
যেভাবে আমি চেয়েছি,
আপনারা চেয়েছিলেন।
কেড়ে নিতে দেইনি মায়ের ভাষা,
দিয়েছি বুকের তাঁজা রক্ত,
ছিনিয়ে এনেছি একটি দেশ, একটি মানচিত্র।

কোথায় পেয়েছিলাম সেই প্রাণ শক্তি!
যেখানে সব অপশক্তি হয়েছিল ম্লাণ ।
আজ আমার উপস্থিতি
কেউ টের না পেলেও,
আমি হতাশ হবোনা।
কেননা লজ্জা ঘৃণা ভয়
আমার গলা পেঁচিয়ে রেখেছে।

কোথায় সেই ভাই যার কাঁধে কাঁধ মিলিয়ে
যুদ্ধে গিয়েছিলাম?
কোথায় সেই বোন যে সাজ-সজ্জা ছেড়ে
পথে নেমে এসেছিলো অধিকার রক্ষায়?
বড়দের স্নেহ ছোটদের ভালোবাসা
প্রেমিকার কথার মূল্য
কোথায় সব!

তোমরা কি পারো সব ফিরিয়ে আনতে আবার
সেই বন্ধুর হাত সেই ভালোবাসা প্রেম
সব ফেরত চাই আমার।
আজ এসবের বড় অনুপস্থিত দেখা যাচ্ছে
মিথ্যাকে একশত বার আওড়িয়ে
সত্য প্রমানের চেষ্টা চলছে।
চলা কি যায়না একসাথে?
বলা কি যায়না ভালোবেসে -
" আমার সোনার বাংলা আমি তোমায় ভালোবাসি "

অপেক্ষা

- ফারহানা আঞ্জুম মুনিয়া

মাঝে মাঝে আমার মনে হয়
এই যে এই ঘর, এটা আসলে একটা রাজপ্রাসাদ
আর আমি!
সেই প্রাসাদের বন্দিনী রাজকন্যা।
সারাদিন শুধু ছুটি আর ছুটি
এ ঘর হতে সে ঘর, এ জানালা হতে সে জানালা
আর অপেক্ষা করি।
না এ অপেক্ষা কোন রাজপুত্রের নয়,
এ অপেক্ষা আমার আত্মার ফিরে আসার।
তার কাছেই শুনবো আমি রূপালী আলোয় ইলিশের নৃত্য ঝংকার,
দেখবো জোনাকির আলো
আর
শুকবো পাকা ধান আর ফড়িং এর লুকোচুরির গন্ধ।
আমি অপেক্ষা করছি..
নাগিনীর বিষবাস্পে দূষিত হবার আগেই
সে আসুক ফিরে সাদা ঘোড়ায় চেপে।

আমি

-আন্জুমান আরা

বাবার রাজকন্যা আমি
ভাইয়ের আদরের বোন
প্রেয়সী আমি প্রেমিকের কাছে
স্বামীর লক্ষি বৌ
মমতাময়ী সন্তানের কাছে
আমিই সে একজন।

কিন্তুতারপর.....
মানুষ আমি আমার কাছে
আমি ভালোবাসি
স্নেহ , শ্রদ্ধাকরি
আমি ঘৃণা করি।
প্রেরণা দেই, জাগিয়ে তুলি
এগিয়ে নেই
পিছিয়ে পড়া মানুষ গুলোকে।

আমি রোকেয়া, সুফিয়া
কিংবা জাহানারা ইমাম।
আমি ডায়না আমি তেরেসা
আমি হিলারী আমি হাসিনা।
আমি অশুর বিনাশী দূর্গা
আমি মালালা।
আমি ফাতিমা আমি আসিয়া
আমি তোমার জন্য সৃষ্ট
বিবি হাওয়া।
তোমাতে আমাতে মিলেই
বিধির সকল চাওয়া।

তবে কেনো আমায় পেছনে রাখো
যেখানে আমার থাকার নয়?
আমি খেলতে পারি
খেলাতে ও পারি
আমি গড়তে পারি
ভাঙ্গতে ও পারি।
আমি বাঁচাতে পারি
অস্ত্র হাতে শত্রুকে মারতে ও পারি।
আমি পাহাড় চুড়ায় উঠতে পারি
পাতাল ভেদে নামতে পারি।
আমি ভূলোক ছাড়ি
মহাকাশ জয় করতে পারি।

দুর্বল নয় সবল আমি
তোমার যেমন ভূষণ আছে
আমার ও ঠিক তেমনি আছে
তোমায় ছাড়া আমি যেমন
আমায় ছাড়া তুমি ও তেমন
জল ছাড়া বৃক্ষ যেমন।

মিছেই কেবল আঙ্গুল তোলো
জীবন টাকে বিষিয়ে তোলো
সময় এলো বদলাবার আজ
ভাবনা গুলোই দাও কারুকাজ।

আমার প্রিয় বন্ধুরা

আমার জীবনে অনেক বন্ধু আছে। আবার অনেক বেস্টফ্রেন্ডও আছে। বড় হলে আরো অনেক বন্ধু হবে। আমার বেস্ট থেকে বেস্ট ফ্রেন্ডরা হলো--জারিফ, রাফাত, সনেট, লুবান ও জারির। আমার এই বন্ধু গুলোর মধ্যে জারিফ সব থেকে ভালো বন্ধু। আমার পার্ক ইন্টারন্যাশনাল স্কুলের বন্ধুরা হলো--জারিফ, রাফাত, লুবান ও জারির। আমরা যখন কেজিতে পড়তাম তখন আমরা অনেক খেলা খেলতাম, যেমন: লুকোচুরি, চোর-পুলিশ, বে-ব্লেড ইত্যাদি। একদিন হলো কি, আমরা সব বন্ধু মিলে একটা বে-ব্লেডের টুর্নামেন্ট রেখেছিলাম কেজিতে থাকার সময়, ক্লাস ফোরের ভাইয়াদের সাথে। তখন আমি আর ক্লাস ফোরের একটা ভাইয়া ফাইনালে গেলাম। তারপর ফাইনালে আমিই জিতলাম। আর সাথে সাথেই বেল বেজে গেল। আমি আমার বে-ব্লেড নিতে ভুলে গেলাম। আমার বে-ব্লেড ক্লাস ফোরের ভাইয়ারা নিয়ে গেছে। তারপর ছুটি হওয়ার পর আমার মনে পরলো, আমি আমার বে-ব্লেড আনতে ভুলে গিয়েছি। তখন আমি আর আমার বন্ধুরা কিছু না ভেবেই দিলাম দৌঁড়। তারপর ক্লাস ফোরের ভাইয়াদের কাছ থেকে আমার বে-ব্লেড নিয়ে এসেছি।

আমরা সবাই মিলে অনেকবার পিকনিকে গিয়েছি। এখন শুধু আমার জারিফ আর রাফাতের সাথে দেখা হয়। আমি আর জারিফ প্রতি শুক্রবার পার্কে যাই। আর শুধু সনেট হলো সাউথপয়েন্ট স্কুল এন্ড কলেজের বন্ধু। আমাদের দুইজনের "দিপু নাম্বার টু" এর মতো হয়েছে। প্রথমে মারামারি,তারপর মিশামিশি। এখন আমার আগের বন্ধু আর কেউ নেই , শুধু সনেট ছাড়া। সনেটই শুধু এই স্কুলে পড়ে। আমি আমার আগের বন্ধুদের অনেক অনেক অনেক মিস করি।

সহন স্পন্দন
৪র্থ শ্রেনী
সাউথ পয়েন্ট স্কুল
মা: নাসরিন আক্তার

The story of Anne Frank

It's a story during the Second World War. In Germany women and children used to live in underground room to be safe of attack.Anne Frank was a little girl who lived in Germany with her family.They were hidden to be safe from the attack of the enemies in her father's office. She felt bored there. Because at that time there was no source of entertainment like-computer, mobile, television or any other devices. Because at that time the light of science just started in the world. So Anne used to write a diary. She used to write about her family and her daily life which was full of misery. After some day she was died. Because she was captured by the soldiers of Hitler and she was killed along with her family. After the war some soldiers went to her father's office and found her diary. They became very emotional by reading the diary. Then the diary was translated in 17 languages because she used to write very well about her miserable life. We came to know many things from her diary about the second world War.

Labib Ashhab
Class-6
Mother: Farida Yeasmin

ফারহানা মীম ঋতু, আমাদের শিক্ষা প্রকল্পের আওতায় বর্তমানে ভারতেশ্বরী হোমসে দ্বাদশ শ্রেণীতে অধ্যায়নরত, কৃতজ্ঞতা জানাতে সে একটি আবেগ ঘন চিঠি লেখে আমাদের। যার খন্ডাংশ এখানে তুলে ধরা হলো:

''জীবন যুদ্ধে অনেক দূর যেতে হবে আমাকে। অনেক যুদ্ধ করতে হবে।মা'কে সুখ দিতে হবে। স্বশিক্ষিত হতে হবে। দেশের জন্য কাজ করতে হবে। এই লক্ষ্য নিয়ে প্রতিদিনের সকাল শুরু হয়। আপনারা আমার জন্য অনেক দোয়া করবেন। আপনারা আমাকে নিয়ে যে স্বপ্ন দেখছেন, আমি যেন তা রক্ষা করতে পারি। আপনাদের মুখে যেন আমি হাসি ছড়াতে পারি। আর ভবিষ্যতে আপনাদের মতোই কোনো মহৎ কাজে জড়িত থাকতে পারি। যতদিন নিঃশ্বাস থাকবে, ততদিন যেন আপনাদের সাথে, আপনাদেরই মতো মহৎ কাজের ধারা চালিয়ে যেতে পারি।''

ইতি
ফারহানা মীম ঋতু
দ্বাদশ শ্রেণী
বিজ্ঞান শাখা
ভারতেশ্বরী হোমস।

আসক্তি

সুলতানপুর গায়ে একটি ছোট ছেলে বসবাস করে তার নাম অমি। ছেলেটা ভারি দুষ্টু। বয়স ৮ বছর। পড়া লেখায় মোটামুটি।সারাদিন খেলাধুলা ও ঘোরাঘুরি করতে ভলোবাসে। বাবা সরকারি চাকরিজীবি। মা গৃহিণী । বেশ ভালোই কাটছিল তাদের দিনকাল । একদিন বাবা বাসায় এসে বললেন আমার ঢাকায় পোষ্টিং হয়েছে। আমাদের সবার ঢাকায় যেতে হবে, এটা শুনে অমি খুব খুশি হলো । অমির মা সবকিছু গোছাতে ব্যস্ত হয়ে পড়লেন। অবশেষে ঢাকার উদ্দ্যেশে রওনা হলো অমি ও তার পরিবার। ঢাকার বনশ্রীতে একটি ফ্ল্যাটে উঠলো। তারা সবাই ক্লান্ত হওয়ায় কোনো রকম গুছিয়ে রেখে তারা বাহির থেকে খাবার এনে খেয়ে ঘুমিয়ে পড়ল। পরদিন আবার সবকিছু গোছাতে ব্যাস্ত হয়ে পড়লেন তার মা এবং তার বাবা অফিসে গেলেন। অমিকে নতুন স্কুলে ভর্তি করে দিলেন। স্কুল থেকে ফিরে এসে অমি বিকেলে ছাদে যায় খেলতে। কিন্তু , সে ছাদে ছেলেদের সাথে মারামারি করে ঘরে ফিরে আসে। প্রায়দিনই সে এভাবে মারামারি করে ঘরে ফিরে। এতে অমির মা–বাবা ভয় পেয়ে যায়। তাই , কিছুদিন পর অমির বাবা তার জন্য একটি কম্পিউটার কিনে আনে । এতে অমি খুব আনন্দিত হয় । সে এখন ছাদে না যেয়ে বাসায় কম্পিউারে গেমস খেলে । আস্তে আস্তে সে গেমস খেলার প্রতি আসক্ত হয়ে পরে । তার পড়ালেখার প্রতি অনিহা চলে আসে । এটি তার মা–বাবা বুঝতে পারেনি। যখন বুঝতে পারল তখন অনেক দেরি হয়ে গিয়েছিল। তারপর তার বাবা কম্পিউটারটি বিক্রি করে দেয়। কম্পিউটার বিক্রি করার পর সে রাগে স্কুলে যাওয়া বন্ধ করে দেয় ,খাওয়া–দাওয়া বন্ধ করে দেয়। অমির এমন অবস্থা দেখে তার বাবা আবার কম্পিউটার কিনে দেয়। একদিন তার মা–বাবা বাহিরে বেড়াতে যাচ্ছিল, কিন্তু অমি তাদের সাথে বেড়াতে যায়নি। সে গেমস খেলছিল। গেমস খেলায় বার বার জয় পেতে ব্যর্থ হওয়ায় সে ভীষণ রেগে যায় । টেবিলে একটি গ্লাস ছিল সে গ্লাসটি কম্পিউটারের দিকে ছুড়ে মারে । হঠাৎ একটি বিস্ফোরন হয় । যার ফলে পুরো ফ্ল্যাটে আগুন ধরে যায়। অনেক মানুষ পুড়ে মারা যায়, বাদ পরেনি অমিও। পরিশেষে বলা যায় যে, কোনো কিছুর উপর আসক্ত হওয়া আমাদের উচিত নয়। কারণ, আসক্তি এক সময় আমাদের ধ্বংসের দিকে নিয়ে যায়।

তাসনিম হাসান তাহা
সপ্তম শ্রেণি
মা-সুফিয়া আক্তার

বাবা

কোথায় গেলে পাব তোমায়
বলতে পার তুমি ?
রাত জেগে বসে থাকি,
শুধু তোমায় ভাবি,
কী বললে তুমি আবার
ফিরে আসবে বাবা?
পৃথিবীতে সবার আগে
বাবাকে চাই আমি
বাবাই আমার আদর্শ তাই
সবার চেয়ে দামি।

পৃথ্বি রাজ মিত্র
ষষ্ঠ শ্রেণি
মা-ঝুমা সাহা

স্মৃতির পাতায় ভারতেশ্বরী হোমস

ঝুমা সাহা

আমাদের বাড়িটা ছিলো জেঠা মনির বাড়ির একদম কাছে। তাই ছোটোবেলা থেকেই জেঠা মনির আদর্শ, ভারতেশ্বরী হোমস্, কুমুদিনি হাসপাতাল এসব কিছুর সাথেই একটু বেশিই পরিচিত।

ভারতেশ্বরী হোমস্রে এত জনপ্রিয়তা মেয়েদের সর্ব বিষয়ে পারদর্শী করে তোলা, এসব কিছুই আমার মাকে ভীষণভাবে আগ্রহী করে তোলে। তাই আমার মা'র খুব ইচ্ছা ছিলো আমি ভারতেশ্বরী হোমস্রে পড়াশোনা করি। মায়ের ইচ্ছাতে আমারও ভীষণ আগ্রহ ছিলো ভারতেশ্বরী হোমস্রে পড়াশোনা করার। কিন্তু আমার বাবার ছিলো ঘোর আপত্তি। তাই দুই বার ভর্তি ফরম এনেও ভর্তি পরীক্ষা দেওয়া হয়নি। অবশেষে ১৯৯১ সালে বাবাকে না জানিয়ে ভর্তি ফরম এনে পরীক্ষা দেওয়া এবং পরীক্ষায় ভর্তি হওয়ার সুযোগ পাওয়া। অনেক অনুরোধ করে বাবাকে রাজি করিয়েছিলাম হোমস্রে ভর্তি হওয়ার জন্য। অবশেষে বাবা রাজি হয় কিন্তু একটা শর্ত সাপেক্ষে। আর সে শর্ত ছিলো "হোমস্রে ভর্তি হওয়ার পর যদি ভালো না লাগে, তাহলেওআর ফিরে আসা যাবে না।" বাবার শর্তে রাজি হয়ে ভর্তি হয়েছিলাম ভারতেশ্বরী হোমস্রে।

ভর্তি হওয়ার তারিখ জানার পর আমার আর তর সইছিলো না কবে যাবো হোমস্রে। তারপর একদিন আসলো আমার সেই কাঙ্ক্ষিত দিনটি। শুরু হলো হোমস্রের জীবন। হোমস্রে যাওয়ার দুই একদিন যেতে না যেতেই আর ভালো লাগছিলো না। মনে হচ্ছিলো কবে বাড়ি যাবো। বাবা, মা, ভাই, বোন সবার কথা ভীষণ মনে পড়ছিলো। কিছুতেই ভালো লাগছিলো না। সেই সাথে মনে পড়ছিল বাবার দেওয়া শর্তের কথা। এভাবে যখন কিছুদিন কেটে যায় আস্তে আস্তে সবকিছু ভুলে ভারতেশ্বরী হোমস্রের সবাই হয়ে যায় সবচেয়ে আপন। এরপর আর পেছনে তাকাতে হয়নি। কিভাবে যে সময় কেটে গেলো। স্কুল পেরিয়ে কলেজ। একসময় কলেজ শেষ করে কখন যে হোমস্রের জীবন শেষ করেছি টেরই পাইনি।

হোমস্ থেকে বের হয়ে আসার পর যেখানেই গিয়েছি বিশ্ববিদ্যালয়, কর্মস্থল, শ্বশুর বাড়ি, বন্ধুমহল সবার কাছেই আলাদা ভালোবাসা পেয়েছি। শুধুমাত্র ভারতেশ্বরী হোমস্রের ছাত্রী বলে। সত্যিই আমাদের ভারতেশ্বরী হোমস্রের মেয়েরা সবার চেয়ে একটু আলাদাই। সবার সাথে মেলামেশা, আচার-ব্যবহার, পড়াশোনা এসব কিছুতেই তাদের মধ্যে যে বৈচিত্রতা ফুটে ওঠে তা সত্যিই চোখে পড়ার মত। তাইতো এত বছর কেটে যাওয়ার পরও হোমস্রের স্মৃতি ভুলতে পারিনি।

বার বার ফিরে যেতে ইচ্ছে করে হোমস্রের সেই পুরোনো দিনগুলোতে। মনে পড়ে ফেলে আসা দিনগুলির কথা। এখন বুঝি জীবনের সবচেয়ে আনন্দের দিনগুলি কাটিয়েছি হোমস্রে থাকার সময়। তাইতো ফেলে আসা স্মৃতিগুলো ভীষণ মনে পড়ে আর ফিরে যেতে ইচ্ছে করে ভারতেশ্বরী হোমস্রে। জীবনের শেষ দিন পর্যন্ত স্মৃতির পাতায় থাকবে প্রিয় ভারতেশ্বরী হোমস্। খুব ভালোবাসি তোমাকে ভারতেশ্বরী হোমস্।

মা ও তার অশ্রুসিক্ত অনুভতি

রোকেয়া সুলতানা

লেখা-লেখির সময়টা চলে গেছে বহু বছর আগেই। সেই সময় সব চাইতে বেশী চিঠি আমি আমার শ্বশুর মশাইকে লিখেছি। আজ যখন বহু বছর পর নিজের ভাবনা গুলোকে একত্রিত করে লিখতে বসলাম, খুঁজেই পাচ্ছিনা যে কি লিখব, হঠাৎ 'মা' শব্দটির ডাকে আমার ভাবনায় ছন্দপতন হলো। দুনিয়াতে কত গুলো কোহিনুর হীরা আছে, তা সঠিক ভাবে আমার জানা নেই, কিন্তু আমার দুই সন্তান আমার কাছে কোহিনুরের চেয়েও দামী, অনেক বছরের সাধনা, যন্ত্রনা, একাকীত্ব আর যুদ্ধের সন্তান আমার রুবাইশা ও রেহান।

আজ লিখতে গিয়ে মনে হলো এর থেকে বড় কোন গল্প আমার জীবনে নেই। প্রতিটি মেয়েই তার সংসার শুরু করে প্রথম পদক্ষেপ হিসাবে নিজেকে মা রূপেই দেখতে চায়। আমিও তার ব্যাতিক্রম নই। বিবাহিত জীবন শুরু হবার প্রায় তিন বছর পরে যখন আমি জানতে পারলাম যে, আমি মা হতে যাচ্ছি, আর সবার মতই আমার জীবন যেন বদলে যেতে শুরু করল। আমার স্বপ্ন গুলো নতুন করে দিশায় চলতে শুরু করলো। ঢাকা শহরের ছোট্ট একটি বাসায় তখন আমি আর আমার স্বামী থাকতাম। টেনশন আর নতুন এক স্বপ্ন নিয়ে দিন গুলো ভালই চলছিল। ২০০৭ সালের এপ্রিলের এক দিন মধ্য রাতে তীব্র যন্ত্রনার মধ্যে দিয়ে আমার মনের মধ্যে লালিত স্বপ্ন গুলো ভেঙ্গে চুরমার হয়ে গেল। বড্ড কষ্ট হয়েছিল, শরীরের যন্ত্রনা থেকেও মনের মধ্যের যন্ত্রনাটাই সেদিন খুব বেশী ছিল।

মা হতে পারিনি বলে আত্মীয় স্বজনরা অনেক সান্ত্বনার বাণী শোনাতো। প্রিয় মানুষ গুলোর যত্ন আমাকে ঘিরে রেখেছিল। কোন দু:খই স্পর্শ করতে পারিনি সে দিন। আমিতো মা সেদিনই হয়ে গেছি, যে দিন নিজের মধ্যে আমার সন্তানকে অনুভব করেছিলাম, কিন্তু 'মা' ডাকটি সেবার আর শোনা হলোনা। খুব খুব কেঁদেছিলাম। তারপর আবার চোখ মুছে ভারাক্রান্ত মনে নিজের কর্ম জীবনে ব্যস্ত হয়ে পড়লাম নিজের খারাপ লাগাকে ভুলে থাকার জন্য। শত ব্যস্ততায় কিছুই ভুলিনি। এমনকি আজও ভুলিনি, কারণ স্বপ্ন ভাঙ্গার যন্ত্রনা অনেক, যা কোনদিনও ভোলা যায়নাা। দিনের পর দিন চোখের জল পড়েছে কেবলই মা হবার তীব্র আকাংখা নিয়ে আর আল্লাহকে বলতাম যেন 'মা' ডাকটা শুনতে পাই।

একজন কর্মজীবি পরিবার যদি ছুটি পায় কোন একদিন, বেশির ভাগ সময় বাড়িতে থাকতেই পছন্দ করে, কোন দাওয়াত পেলেও যেন যেতে মন চায়না তাদের, কিন্তু আমি যেতাম, কারণ যে কোন অনুষ্ঠানেই অনেক বাচ্চাদের একটা মিলন মেলা হতো, আর বাচ্চাদের সঙ্গ আমার কাছে এতই প্রিয় ছিল যে, আমার বেড়াতে যাবার কারনই ছিল বাচ্চাকাচ্চা, তারা সম্পর্কে আমার ভাগ্না-ভাগে, ভাস্তাভাস্তি বা ভাই বোন যেই হোক না কেন ছুটে চলে যেতাম।

২০০৭ থেকে ২০১৬ সাল পর্যন্ত আমার জার্নিটা কম ছিলনা। আমি যেন মা ডাক শোনার যুদ্ধে নেমেছি, এমন কিছু নেই যে তার কাছে যাইনি। এমনকি দেশ ছেড়ে বিদেশেও পাড়ি জমিয়েছি শুধু মা হবার আশায়, কত দিন সুদূর দেশে একা একা কাটিয়েছি। এই যুদ্ধে আমার স্বামী সর্বদা পাশে ছিলেন। সাহস যুগিয়েছেন, সব সময় আর ছিলেন আমার বিশাল পরিবার যারা সর্বদা আমাকে সাপোর্ট দিয়েছেন।

আল্লাহর অশেষ রহমতে যখন দ্বিতীয় বারের মত ডাক্তার আমাকে মা হবার সেই সুসংবাদটি দিয়েছিলেন, আনন্দে তখন চোখ দিয়ে অঝরে পানি ঝরছিল। সর্বদা চিন্তা আর প্রতীক্ষার দিনগুলো বড়ই কঠিন ছিল। অবশেষে ১১ জুলাই ২০১৭ সালে আমার একটি কন্যা ও একটি পুত্র সন্তান পৃথিবীতে আলোর মুখ দেখলো আর আমি আবারো 'মা' হলাম।

এখন আমি মা ডাকটা শুনতে পাই যখন, মনটা ভরে যায়। জীবনের সব না পাওয়া আজ পূর্ণ হয়েছে আমার। আমার সন্তান দুজন যখন আমাকে ঘিরে চক্রাকারে ঘুরে ঘুরে চিৎকার দিয়ে খেলতে থাকে, আমি তখন কেবলই মন্ত্রমুগ্ধের মত তাকিয়ে থাকি আর মনে মনে বলি "এখন আমিও মা"।

এসো

‘এসো’ তে এসো
‘এসো’ তে ভাসো
‘এসো’ তে হাসো।
এসো স্বপ্ন দেখতে
এসো স্বপ্ন দেখাতে।
এসো বিশ্বাস ও প্রেরণায়
এসো স্বচ্ছ এক ধারনায়।
এসো মমতা ও ভালোবাসায়
এসো উদ্যোমে ও আস্থায়।
‘এসো’ দৃপ্ত উষার
‘এসো’ স্নিগ্ধ সাঁঝে
‘এসো’ তোমার আমার
‘এসো’ আমাদের মাঝে।

সিফাত ইবনে সিরাজ (নিয়াজ)

বোধ

হাফেজা খাতুন হামজু

না বলা কথা গুলো কখনই বলা হয় না। তবুও জীবন থেমে নেই কোনো এক অজানা পথ চলায়। যে রাঁধে সে চুলও বাঁধে, এই আমার পথচলা।

পঞ্চপান্ডবী

নুসরাত বিনতে আহছান

All you need is positivity
Colours of the world
Spice up your life
Every boy and every girl
Spice up your life
People of the world
Spice up your life..."

পঞ্চপান্ডব- মহাভারতের পঞ্চপান্ডবের গল্পের সাথে অল্প-বিস্তর সবাই পরিচিত আমরা, কিন্তু "পঞ্চপান্ডবী"...? গ্রেট ব্রিটেনের অল-ফিমেল ব্যান্ডের সদস্য। নব্বই দশকের মিউজিক ওয়ার্ল্ডের তুমুল উম্মাদনা! পপ সেন্সেশান! "Spice Girls" the best selling girl group of all time. Selling কখনই শিল্পের মানদণ্ড হয় না, কিন্তু রিয়েলিস্টিক ও মেল-ডোমিনেটিং ওয়ার্ল্ডে কমার্সিয়্যালি সাকসেসফুল না হলে মিউজিক ইন্ডাস্ট্রিতে তার কানাকড়িও দাম নেই -মুখে যত বড় লেকচার ঝাড়া হোক না কেন! Spice Girls প্রথম শুনি যখন আমি ভার্সিটি লাইফে পা রাখি! তাদের সেই বিখ্যাত ট্রেড মার্ক গান "Wannabe" যখন-তখন এমটিভিতে বাজতো। "Friendship Never Ends" লাইনটি বয়ে আনলো নতুন জোয়ার , বন্ধুত্বের বন্ধন নিয়ে এত জোরালো আওয়াজ আগে শোনা যায়নি বা এত তীব্রতা নিয়ে আগে আসেনি! তাদের হাত ধরেই "Girl Power" শব্দটির তুমুল জনপ্রিয়তার শুরু! নেলসন মেন্ডেলার সাথে সাক্ষাৎ!"Spice World" মুভির প্রিমিয়ামে প্রিন্স চার্লসের গালে চুমু দেয়া আর তাঁর bottoms bum করার ব্যাপারটি তো মিডিয়ায় হটেস্ট কেক! ১৯৯৮ এর মে'তে জেরির গ্রুপ থেকে স্বেচ্ছায় বিদায় নেয়া, ফ্যানদের মধ্যে ভীষণ হাহাকার জাগিয়েছিল আর ট্যাবলয়েড গুলোর লুফে নেয়া হট খবরে পরিণত হয়েছিল! তারপর থেকে ২০০০ এ Spice Girls আন অফিসিয়্যালি বিলুপ্ত হয়ে যায়! এ সময় পর্যন্ত তাদের তিনটি অ্যালবাম বের হয়---"Spice", Spice World ", " Forever"....মেল সির গাওয়া সে লাইনটি...Spice Girls Forever, I'll be waiting.. "বুকের মধ্যে খুব গভীর একটা ধাক্কা দেয় এখনো!

এবার ব্যান্ডটি সৃষ্টির শানেনুজুল একটুখানি বয়ান করি---১৯৯৪ এ Stage পত্রিকার একটি অ্যাড দেখে অডিশন দিতে আসা চারজনকে প্রাথমিক সিলেক্শনে নেয়া হয়! এরা ছিল মেল বি, মেল সি, ভিক্টোরিয়া বেকহাম (তখন ছিল অ্যাডাম) আর মিশেল স্টেফানি! জেরি সেকেন্ড অডিশনে আসে! আর পরবর্তীতে মিশেল তার পার্সোন্যাল সমস্যার কারণে ব্যান্ড ছেড়ে দিলে এমা বান্টন তার পরিবর্তে সর্বকনিষ্ঠ সদস্য হিসেবে যোগ দেয়! এ সময় টুকুতে ব্যান্ডটির নাম ছিল "Touch".পরে হয়ে যায় Spice Girls. এরপর সময়ের সাথে সাথে মিডিয়া ওদের কিছু বৈশিষ্ট্যের উপর ভিত্তি করে নাম দিল, যা ওদের আসল নামকে অনেকখানি আড়াল করে দিয়েছিল! মেল সির নাম নাম দেয়া হল Sporty Spice---তার অ্যাথেলেটিক সুলভ ভাবভঙ্গীর জন্য, মেল বি--Scary Spice---খুব লাউড, ওয়াইল্ড এবং আউটস্পোকেন হওয়ার জন্য, জেরি হোলিওয়েল--Ginger Spice --খুব স্ট্রং পার্সোন্যালিটি, প্যাশোনেট এবং যথেষ্ট আবেদনময়ী বৈশিষ্ট্যের জন্য, ভিক্টোরিয়া--ভিকি---Posh Spice---তার পলিশড অ্যাটিচুড ও ওয়েলদি ব্যাকগ্রাউন্ডের জন্য এবং এমা বান্টন---Baby Spice---সবচেয়ে কনিষ্ঠ , লাভলি ,সুইট এবং ইনোসেন্ট বেবি ফেসের জন্য। এভাবেই Spice Girls এর Spice Girls হয়ে ওঠা! তবে তাদের নিয়ে যে সমালোচনাটা শোনা যায় তা হল তারা ভয়েসের চেয়ে তাদের ইউনিক বৈশিষ্ট্যের জন্য সিলেক্টেড হয়েছিল ব্যান্ডটি তৈরি করতে! তারা হয়তো বেস্ট ভোকাল ছিল না, কিন্তু তাদের মধ্যে সামথিং ম্যাজিকাল কিছু একটা ব্যাপার ছিল, যা তাদের সারা বিশ্বে তুমুল জনপ্রিয়তা এনে দেয়!

২০১৯ এর মে-জুনের দিকে ব্যান্ডটির একটি রিইউনিয়ন ট্যুর হয়। আমি নিউজটি নিয়ে অত বেশি উৎসাহী ছিলুম না! ভাবলুম এই মিডল- এজে এসে এখন Spice Girls শুনবো! একটু বেমানান হয়ে যায় না! তারপরও কেমন করে যেন শোনা হল! তাদের গানতো কেবল শোনার নয়, দেখারও! এরপর দেখলুম আমি ওদের ব্যাপারে একধরনের অবসেসড হয়ে পড়ছি! Spice Girls এর পুরোনো কনসার্ট আর ইনটার্ভিউ গুলো দেখলাম,শুনলাম এবং পড়লাম! এবং মুগ্ধ হয়েছি! ইয়োং বয়োসেও অতটা মুগ্ধ হইনি! কেন কে জানে! হয়ত এই মধ্যবয়সে ভীষণ জটিল পৃথিবীটা হালকা করে দেখার প্রয়াস জেগেছে যাতে ভারবাহী চাপ থেকে নিজেকে কিছুটা হলেও বিমুক্ত করা যায় অথবা তুমুল নস্টালজিয়া! Spice Girls এর একটা গান যেটা অফিসিয়্যালি কখনও রিলিজ হয়নি আমার খুব প্রিয় হয়ে থাকবে---"A Day in Your Life. তবে সবার কাছে , এমন কি আমার কাছেও Spice Girls তারুণ্যের ব্যান্ড, নতুন করে বন্ধুত্বের সংজ্ঞা দেয়ার ব্যান্ড--- নব্বই দশকে মনে করিয়ে দেয়ে এক নস্টালজিক ব্যান্ড ! সত্যি এত জেনুইন স্বতঃস্ফূর্ত আর কেউ করেনি এর আগে.....

"The time is now or never
To fit the missing piece
To take this on together
You make me feel complete
We fall into the future
And through the looking glass
The light shines over our heads
And so it comes to pass

Let's make the headlines, loud and clear(All that I have I give to you my friend)The best things suddenly happen when you are here(Just remember friendship never ends)"....
"Headlines (Friendship Never Ends)"

ওদের পাশে আমরা

ফারিহা আহসান অভ্র

সেদিন সকাল বেলা মা এসে বলেন- অভ্র তোমার টিফিনের টাকা থেকে আমায় কিছু টাকা দাও।আমার কাছে তেমন টাকা থাকে না তবে ঈদ সেলামির টাকাটা থাকে। আমি সে টাকা থেকে মা কে পঞ্চাশ টাকা দিই। মা আবার রৌদ্র আপুর কাছে যায়, আপুকেও বলেন-তোমার পকেট খরচ থেকে আমায় কিছু টাকা দাও। আপু সিএ পড়ে, মাস শেষে পাঁচ হাজার টাকা পায়। আপু মাকে দিলো দুশত টাকা। বললাম---মা তুমি এ টাকা দিয়ে কি করবে?এখন বলা যাবে না, আগে কাজটা করি, পরে বলব। না আমরা এখুনি শুনবো। তাহলে শুনো- আমার একটা কাজ করতে খুব ইচ্ছে করে, তাহলো তোমরা তো লেখা-পড়া করার অনেক সুযোগ পাও, কিন্তু আমাদের পথশিশুরা, বস্তির শিশুরা কিন্তু অনেক সুযোগ সুবিধা থেকে বঞ্চিত। ওদের ইচ্ছা থাকার পর ও লেখাপড়া করতে পারে না। ভাবছি এমন ১০ টা শিশুকে অক্ষর শেখার সরঞ্জামাদি দিবো। ওয়াও মা, তুমি তো ভালো কিছু ভাবছো। তো কি কি দিবে। আমার কথা। হ্যাঁ ভেবেছি ১০ জনকে ১০ টা বাকবোর্ড ১০ প্যাকেট চক ১০ টা আদর্শলিপি দিবো। খুবই ভাল হবে মা, তুমি কবে কিনবে, কবে দিবে? আমিও যাবো তোমার সাথে। আপুর কথা। মা আমিও যাবো তোমার সাথে, আমি বলে বসি।ঠিক আছে, আগে আমি কিনে নিয়ে আসি, যাওয়ার সময় তোমাদের নিয়েই যাবো। তোমরা দেখবে ওরা কত খুশি হয়। মা একটা কথা রাখতে হবে। বলে ফেলো অভ্র। আচ্ছা আমি তো ছোট বেলায় বাকবোর্ড এ লিখি নি, তুমি আমার জন্যেও একসেট কিনবে। আমি লিখবো। বলতেই মা খুব খুশি। দুদিন পর মা ব্যাগ ভরে সব নিয়ে আসে। এনে আমাদের কে দেখায়। মা মোট ১২ সেট নিয়ে এসেছে। আমায় একসেট দিয়েছে আর ১১ সেট প্যাকিং করি আমি, মা আর আপু। পরের দিন আপুর বন্ধ আমারও স্কুল বন্ধ। আমরা তিনজন চলে যাই ফার্মগেট থেকে নাখালপাড়া যাওয়ার পথের একটা বস্তিতে। বস্তিটা তেজগাঁও পোস্ট অফিসের কাছেই। ছোট ছোট ১১ টি শিশুর হাতে আমরা এই ১১ সেট অক্ষর শেখার সরঞ্জামাদি দিই। ওরা অনেক খুশি হয়। আমি আমরা অবাক হয়েছি প্রায় ১০ বছরের একটা মেয়ের কথা শুনে। যখন আমরা দিচ্ছিলাম ছোটদেরকে তখন মেয়েটি এসে বলে-আমারে কি দিবেন।তুমি লিখতে পড়তে পারো না। না, আমি তো হড়ালেয়া শিখি নো, মায় মারা যাওনের হরে বাপজান শহরে আসে। আমরা ওকে ও একসেট দিই। একই পরিবারের দুই শিশুকে দিই। ওদের সাথে আমরা ছবি তুলি, কিন্তু মোবাইলের সমস্যার জন্যে ছবিগুলো ডিলেট হয়ে যায়। ওদের আনন্দ দেখে সত্যিই অবাক হই। বাসায় ফেরার পথে মাকে জিজ্ঞেস করি-আচ্ছা তুমি কবে থেকে এমন একটা ভাবনা ভেবেছো। মা বললেন--একুশে ফেব্রুয়ারির রাতে। আমরা তো কত কথাই বলি, কত কাজ করবো ভাবি, কিন্তু ঠিক ভাবে কি করতে পারি। ইচ্ছে আছে এবার ১১ টি শিশুকে দিয়েছি, সামনের বার ২০ টি শিশুকে দিবো। হয়তো কোন একদিন একশ জনকে দিতে পারবো। তুমি ঠিক পারবে মা, শুধু তুমি না আমরাও আছি তোমার সাথে। এবার আমি পঞ্চাশ টাকা দিয়েছি, সামনের বার একশ টাকা দিবো। আপু বলে-আমি সামনের বার পাঁচশ টাকা দিবো। খুব আনন্দ নিয়ে আমরা বাসায় আসি। মা লেখালেখি করে যখন প্রথম টাকা পায় পত্রিকা থেকে। সেদিন মা অনেক নাস্তা কিনে নিয়ে যায় এতিমখানায়, প্রায় ২৫/৩০ টি শিশুকে নাস্তা খাওয়ায়। মাকে বলেছি এরপর আমরাও টাকা দিব, ওদের জন্যে খাবার কিনে নিয়ে যাবো। একটা দিনের জন্যে হলেও ওদের পাশে আমরা থাকবো।

লেখক পরিচিতি

ফারিহা আহসান অভ্র

বিভিন্ন শিশুতোষ ম্যাগাজিন, দৈনিক পত্রিকা গুলোর শিশুতোষ পাতায়, স্কুল ম্যাগাজিন, দেয়াল পত্রিকা গুলিতে লেখালেখি করে ইতোমধ্যে বেশ প্রশংসা কুড়িয়েছেন। অমর একুশে বইমেলা ২০১৫ তে তার মা বিশিষ্ট প্রাবন্ধিক রহিমা আক্তার মৌ এর সাথে যৌথভাবে তার প্রথম বই " মেঘনার মিষ্টি স্বপ্ন " প্রকাশ পায়।

২০১৯ সালে প্রকাশিত হয় তার একক বই।

প্রত্নতাত্ত্বিক পর্যটন বিকাশের সম্ভবনাময় এক জনপদের নাম ফরিদপুর

এলিজা বিনতে এলাহী
বিশ্বপর্যটক ও শিক্ষক

ফরিদপুর ভ্রমনের সুযোগ হয়েছিল ২০১৭ সালে । বাংলাদেশে হেরিটেজ ট্যুরিজমের সম্ভবনা নিয়ে ৬৪ জেলা ভ্রমনের নিমিত্তে আমার ব্যক্তিগত প্রজেক্ট কোয়েস্টের (QUEST..a heritage journey of Bangladesh) আওতায় ১৫ তম জেলা ছিল ফরিদপুর । ফরিদপুর ভ্রমনের আগ পর্যন্ত আমার ধারনাই ছিল না যে ,এই জনপদ কত সমৃদ্ধ আর হেরিটেজ ট্যুরিজমের জন্য তা কত সম্ভবনাময় । ফরিদপুরের উপর দিয়ে বয়ে গেছে কুমার নদ , আড়িয়াল খাঁ এবং পদ্মা ।ফরিদপুরে জন্মগ্রহন করেছেন পলীকবি জসীমউদ্দিন , বিখ্যাত কণ্ঠ শিল্পী গিতা দত্ত ও সুধীর লাল চক্রবর্তী । সকাল সকাল আমরা ভ্রমণ শুরু করেলিাম পল্লী কবির স্মৃতি বিজড়িত বাসস্থান দিয়ে । এই স্বল্প পরিসরে পুরো ভ্রমণ বর্ননা করা সম্ভব নয় , তাই ফরিদপুরের বিশেষ বিশেষ স্থাপনা গুলোর কথা উলেখ করবো যেগুলো ফরিদপুর জেলাকে বাংলাদেশ তথা বিশ্ববাসীর কাছে পরিচিত করতে পারে। আমার মতে ফরিদপুর জেলার সবচেয়ে উলেখযোগ্য হেরিটেজ হলো মধুখালী উপজেলার মাথুরাপুর দেউল । দেউলটির স্থাপনকাল উলেখ করা হয়েছে ১৬৩৬ খ্রিষ্টাব্দ। ৭৩ ফুট উচ্চতা বিশিষ্ট মথুরাপুর দেউলটি ঢাকা-খুলনা মহাসড়ক ধরে এগুলেই দৃষ্টি কাড়বে। দেউল শব্দের অর্থ মন্দির , আকার আকৃতি দেখে স্থাপনাটিকে মন্দিরই মনে হয় । আমাদের দেশের বেশির ভাগ প্রত্নতাত্ত্বিক নিদর্শন গুলোর সঠিক কোন তথ্য থাকে না বিধায় লোক মুখে কথিত তথ্যের উপর অথবা জনশ্রুতির উপর নির্ভর করেই ইতিহাসের সাথে পরিচিত হতে হয় । আবার যে স্থাপনাগুলো প্রত্নতত্ত্ব অধিদপ্তরের তত্ত্বাবধানে থাকে সেখানে মাঝে মাঝে কিছু তথ্য সম্বলিত নোটিশ বোর্ড পাওয়া যায় । মথুরাপুর দেউলের কিছু তথ্যগুলো সেখান থেকে আর আবুল কালাম মোহাম্মদ যাকারিয়ার বই বাংলাদেশের প্রত্নসম্পপদ থেকে নেওয়া । ভূষনার জমিদার সত্যজিতের মৃত্যুর পর , সংগ্রাম সিং নামক এক সেনাপতিকে বাংলার দায়িত্ব দেওয়া হয় । সংগ্রাম সিং সেই সময় এই দেউল নির্মাণ করেন । দেউলটি নিয়ে আরও একটি ইতিহাস আছে , কেউ কেউ মনে করেন এটি সম্রাট আকবরের বিজয়স্মৃতি স্তম্ভ । আকববের সেনাপতি মান সিং রাজা প্রতাপাদিত্যের বিরুদ্ধে যুদ্ধ জয়ের স্মারক হিসেবে এটি নির্মিত হয় । এই গল্প কতটুকু সত্য জানি না , কারণ সেনাপতি মানসিংহের সাথে প্রতাপের কোন যুদ্ধ হয় নি। মানসিংহের মৃত্যু হয় ১৬০৬ খ্রিষ্টাব্দে। এর আরও প্রায় ৯/১০ বছর পর মোঘলদের সাথে প্রতাপের যুদ্ধ হয়েছিল সম্রাট জাহাঙ্গীরের রাজত্ব কালে । আবুল কালাম মোহাম্মদ জাকারিয়ার বইতে এই রকমই বর্ণনা পাওয়া যায় । দূর থেকে দেখে গোল মনে হলেও , দেউলটির কাঠামো বারো কোণবিশিষ্ঠ স্থাপনাটির মূল গঠন উপাদান চুনসুরকির মিশ্রন। পুরো স্থাপনা জুড়ে টেরাকোটার জ্যামিতিক ও বাহারী চিত্রাংকণ রয়েছে, রামায়ণ কৃষ্ণলীলার মত হিন্দু পৌরাণিক কাহীনির চিত্র, গায়ক, নৃত্যকলা এর গায়ে খঁচিত রয়েছে। দেউলে একটি মাত্র প্রবেশদ্বার। দেউলের আরও দুইটি ফটকে লোহার গ্রিল লাগানো, বাকি দুটি ইট দিয়ে বন্ধ করা। তবে দেউলটির কোথাও কোন লেখা পাওয়া যায়নি। ভিতরে কোন মূর্তি নেই । কোন সময় ছিল কিনা বোঝা যাচ্ছে না । তবে ভেতরটি একেবারেই সাদামাটা ।

তবে সদরপুর উপজেলার বাইশ রশি জমিদার বাড়ি দেখে মন খারাপ হয়েছে । সামনের কিছু অংশ ভূমি অফিস ব্যবহার করছিল সেসময় । বাকি অংশ খুবই নাজুক অবস্থায় রাখা, গা ছমছমে এক ভূতুড়ে বাড়ি মনে হচ্ছিল । ৪০০ বছরের ইতিহাস বহনকারি কানাইপুর জমিদার বাড়ি, যা স্থানীয়ভাবে এখন শিকদার বাড়ি নামেই অধিক পরিচিত । সেটির অবস্থাও খুব ভালো নয়। মুল ভবনটিতে বসবাস করছেন জমিদার বংশের উত্তরাধিকারীরা। বোয়ালমারি উপজেলার খরসুতি গ্রামের জমিদার বাড়ি সংলগ্ন বেলে পাথরের মন্দিরটি এখন পরিত্যক্ত অবস্থায় আছে। যদিও মূল জায়গাটিতে একটি স্কুল স্থাপন করা হয়েছে । শুধু এখানেই নয় বাংলাদেশের অনেক জেলাতেই আমি দেখেছি হেরিটেজ স্থাপনা গুলো অফিস-আদালত, স্কুল-কলেজ হিসেবে ব্যবহৃত হতে। ভাঙ্গা উপজেলার পাতরাইল মসজিদের স্থাপনকাল সম্পর্কে জানা যায়নি , তবে ধারনা করা হয় এটি সুলতানী আমলের। আরও একটি পুরানো মসজিদ আছে ফরিদপুর জেলায়, সেটি দেখার সুযোগ হয়নি সময়ের স্বল্পতার কারনে। সতের শতকের একজন পন্ডিত কবি আলাওল (১৬০৫-১৬৭৩) এর জন্মও ফরিদপুর জেলায় । তিনি আরবী , ফারসি ও সংস্কৃত ভাষায় পারদর্শি ছিলেন । কবি আলাওল ফতেয়াবাদ পরগনার জালালপুরের সামন্ত রাজা মজলিশ কুতুবের অমাত্য পুত্র ছিলেন । হেরিটেজ ট্যুরিজম বিকাশের অপার সম্ভবনার ভূখন্ড ফরিদপুর । পর্যটন শিল্পের এক গুরুত্বপূর্ন ক্ষেত্র হেরিটেজ ট্যুরিজম । বাংলাদেশে হেরিটেজ ট্যুরিজম বিকাশের জন্য প্রয়োজন ঐতিহাসিক স্থান গুলোকে দেখার উপযোগী করে গড়ে তোলা, সংরক্ষন , রক্ষনা-বেক্ষন ও প্রচার প্রসারনা । হেরিটেজ ট্যুরিজমের বিকাশ আমাদের স্থানীয় উদ্যোক্তা, জাতীয় উদ্যোক্তা তৈরিতে সক্ষম যা প্রতিটি জেলার অর্থনৈতিক সমৃদ্ধির সহায়ক । এছাড়াও জেলায় জেলায় পর্যটকদের আবাসনের ব্যবস্থা করা , যোগাযোগ ব্যবস্থার উন্নতি , পর্যটকদের সঠিক তথ্যের যোগান ও নিরাপত্তা নিশ্চিত করা ।

লেখক পরিচিতিঃ
এলিজা বিনতে এলাহী
পেশায় শিক্ষক
বর্তমানে সহকারী অধ্যাপক হিসেবে শিক্ষকতা করছেন ইউনিভার্সিটি অফ সাউথ এশিয়াতে ।
তিনি বিশ্বের ৪৮টি দেশ ভ্রমন করেছেন । এছাড়াও বাংলাদেশের ৬৪ জেলা ভ্রমণ করেছেন দেশের হেরিটেজ ট্যুরিজম বিকাশের কাজে । ভ্রমণ নিয়ে তাঁর দুটি প্রকাশনা আছে ।

সন্তান অভিভাবক সম্পর্ক হোক বন্ধুত্বপূর্ণ"

রহিমা আক্তার মৌ

আমার ছোট সন্তান ফারিহা আহসান অভ্র গল্প লেখে। অনেক কাজই সে ভেবে চিন্তে করে। ও গার্লস গাইড এর সদস্য। ঢাকায় তিনদিনের ক্যাম্পিং হবে, ও যাবে। অভিভাবক হিসাবে অনুমতি দিতে হবে আমায়। স্কুল থেকে বলেছে- ফরম লিখে নিচে অভিভাবক স্বাক্ষর করে নিয়ে যেতে। আগেরদিন ওর মনে ছিলো না। স্কুলে যাওয়ার জন্যে তৈরি হচ্ছে, হাতে সময় কম। অভ্র বলে,সাদা কাগজে তুমি স্বাক্ষর দিয়ে দাও, আমি স্কুলে গিয়ে ফরমের বিষয় লিখবো। বললাম,না, আমি সাদা কাগজে স্বাক্ষর দিই না। তুমি আমাকে অবিশ্বাস কর আম্মু। অবিশ্বাস নয়, সচেতন থাকি। অভ্র দ্রুত ফরমের নাম ঠিকানা আর বিষয় লিখলো, বললাম,এবার দাও স্বাক্ষর দিই। খিল খিল করে হেসে উঠে মেয়ে। বলে, শেষ হয়নি লেখা। শেষ করা লাগবে না, আসল কথাই লেখা হয়েছে। স্বাক্ষর দিই, অভ্র ফরম জমা দিতে নিয়ে যায় স্কুলে। অবিশ্বাস নয়, সচেতন থাকা প্রয়োজন আমাদের সকলের। শুধু এই ক্ষেত্রে নয়, প্রতিটা ক্ষেত্রেই, প্রতিটা মানুষের ক্ষেত্রে।

রিমা ৮ম শ্রেনীতে পড়ে। ওর বাবা একজন ব্যবসায়ী। ব্যবসায়ীদের লাভ ক্ষতি সমুদ্রের স্রোতের মতো। সেদিন ঘরে ঢুকেই বাবা ইলিয়াস মেয়েকে ডাকে, একটা চেক দেখিয়ে বলে, দেখো মা আমি একটা ব্যবসায় এই চেকটা লাভ করেছি। বাবার মন ভালো দেখেই মেয়ে আবদার করে,বাবা আমাকে একটা ট্যাব কিনে দাও, আমার কতদিনের সখ। ইলিয়াস সাহেব মেয়ের আবদার ফেলতে পারেননি। ট্যাব কিনে দিবেন কথা দেন। এই বিষয়ে রিমার মা কিছুই জানেনা। মাত্র ৩/৪ দিন পরেই বাবা মেয়ে শপিং এ যায়, ঘরে ফিরে ট্যাব নিয়ে। রিমার মা আনিসা মেয়ের হাতে ট্যাব দেখে অবাক হন। আস্তে আস্তে রিমা ট্যাবে আসক্ত হয়ে পড়ে। হওয়াটা স্বাভাবিক মনে করি আমি। কারণ এই বয়সটাই যে খুঁটিয়ে খুঁটিয়ে জানার, দেখার, শেখার। আনিসা ইলিয়াসকে বলে,মেয়েকে এটা কিনে দিলে, অথচ আমায় বললেনা। মেয়ে এখন সারাক্ষণ ওটা নিয়েই পড়ে থাকে। আমার মেয়েকে আমি দিয়েছি, তোমার সমস্যা কি? রিমা কোচিং এ যায়, প্রাইভেট এ যায়। যাওয়ার সময় ট্যাব সাথে করে নিয়ে যায়। অন্য বান্ধবীরাও মোবাইল ট্যাব নিয়ে আসে। একজন অন্যজনের থেকে কত কি শেয়ার করে নিয়ে আসে আর বাসায় এসে রাতে চুপে চুপে সেগুলো দেখে। মা আনিসার চোখে পড়ে এসব। ইলিয়াসকে বললে সে বিশ্বাস করে না। উলটো আনিসাকে কয়েকটা কথা শুনিয়ে দেয়। আনিসা এখন পড়লো বিপদে। সে বুঝছে মেয়ে অন্য পথে চলে যাচ্ছে। প্রথমে মেয়েকে বুঝাতে চেষ্টা করে, তাতে কাজ না হলে নিজেই রাতে মেয়ের সাথে ঘুমানো শুরু করে। মায়ের সাথে নিজের রুম শেয়ার করতে রাজি না রিমা। আনিসা মেয়ের রুমে ঘুমালে মেয়ে গিয়ে ড্রয়িংরুমে সোফায় ঘুমায়। এই নিয়েও শুরু হয় সমস্যা। আনিসা ট্যাব দেখতে চাইলে রিমা ট্যাবে পাসওয়ার্ড দিয়ে রাখে। মেয়ের পাশে ঘুমাতে গিয়ে কৌশলে পাসওয়ার্ডটা যেনে নেয়। ইলিয়াস বিশ্বাস করেনি বলে বাধ্য হয়ে ট্যাবে কি আছে, মেয়ে কি দেখে তা ইলিয়াসকে দেখায়। এরপর ইলিয়াস বিশ্বাস করে। কিন্তু ততদিনে রিমা অনেকটাই আসক্ত হয়ে পড়ে। বাবা মা কারোরই নিষেধ শুনে না। কিছু বললে তর্ক করে জেদ দেখায়। রিমা এখন নিজের ইচ্ছে মতোই চলে, কারো কথা শুনে না।

দিপা সমাপনী পরীক্ষা দিয়েছে, ফলাফল ভালো করেছে। ওর বেস্ট ফ্রেন্ড ইভাও ভালো ফলাফল করে। ইভার বাবা ওকে ৩৫ হাজার টাকা দামের ট্যাব কিনে দেয়। সে অনেক খুশি। খবর আসে দিপার কানে। ছোট বেলায় অন্যদের হাতে ট্যাব দেখে নিজে চাইতো। ওর মা সালমা বলতেন, আমরা এমন পরিবারের নয়, যে খেলার জন্যে এত টাকা দিয়ে ট্যাব কিনে খেলবো। জেএসসি পাশ করার পর দিপা চায় ওকেও এমন একটা ট্যাব কিনে দেয়া হোক। বোনের আবদার বুঝে বড় বোন রিয়াও চায় ওকে ট্যাব কিনে দিতে। এতে বাবাও রাজি আছে। কিন্তু ওর মা সালমা রাজি নয়। বড় বোন রিয়া চেয়েছে দিপাকে একটা সাইকেল কিনে দিতে। এতে মা রাজি থাকলেও বাবা রাজি নেই। তাই অনেকদিন ট্যাব কেনা হয়নি। মায়ের সাথে মাঝে মাঝেই দিপা বলতো। মা বুঝিয়ে বুঝিয়ে রাখতো। একদিন দিপা বুঝতে পারে বাবার পকেটে টাকা আছে, বাবার সাথে কথা বলতে বলতে রাজি করে ফেলে। বাবা বলে দিয়েছে দিপাকে ট্যাব কিনে দিবে। সালমা তেমন বাধা দিতে পারেনি। কিন্তু মেয়েকে বলেছে,এটা আমার কাছেই থাকবে। অল্প সময়ের জন্যে পাবে। তবে সামনের পরীক্ষা খারাপ হলে ভাববো এটার জন্যেই খারাপ হয়েছে। তাহলে আর পাবেনা। মেয়ে কথাটা মেনে নেয়। সে ভাবেই দিপাকে ট্যাব কিনে দেয়া হয়। পরের বার পরীক্ষায় সত্যি ও ভালো করেনা। এজন্যে সালমা ট্যাবটা সরিয়ে রাখে। নিজে সময় করে মাঝে মাঝে ১০/১৫ মিনিটের জন্যে দিত। ২য় পরীক্ষায় দিপা ভালো করে। সালমা মেয়েকে এগুলো বুঝিয়ে বলে। এই সময়টা এমনি যত দেখবে দেখতেই চাইবে, জানতে চাইবে। কিন্তু নিজের ক্ষতি করে নয়। দিপাও বুঝতে পারে বিষয়টা। এক পর্যায়ে দিপা বুঝে, আসলেই ওর ট্যাব কেনা ঠিক হয়নি।

পাবলিক পরীক্ষার ফলাফল প্রকাশ পেলেই চারপাশে পাশ-ফেল, ভালো-মন্দ নিয়ে বেশ আলোচনা শুরু হয়। নিজের দুই রিলেটিভ পরীক্ষা দিয়েছে, একজন কুড়িগ্রাম জেলা স্কুল থেকে, আরেকজন কামালপুর মোঃ হাশেম উচ্চবিদ্যালয়, চাটখিল, নোয়াখালী থেকে। দুজনেই জিপিএ ৫ পেয়েছে, শুকরিয়া। পরিচিত এক শিক্ষার্থী ৩.৬৭ পেয়ে পাশ করেছে। পাশের খবর পেয়েই সবাই শুকরিয়া আদায় করেছে। কারণ মেয়েটা পাশ করবে কিনা এটা নিয়ে পরিবার চিন্তায় ছিলো। মিষ্টি বিতরণ কেক কাটা সব করেই মেয়েটাকে উৎসাহ দেয় পরিবারের সবাই। শ্রদ্ধা ভালোবাসা সেই পরিবারের জন্যে।